लघु जिनवाणी

(अभिषेक-शांतिधारा नित्य-पूजन विधि)

पावन प्रेरणा

बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रकाशक

श्री जैनोदय विद्या समूह

कृति	:	लघु जिनवाणी
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
पावन प्रेरणा	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रस्तोता	:	बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना
प्रसंग	:	21वाँ पावन वर्षायोग 2019 पिच्छिका परिवर्तन 2019
संस्करण	:	प्रथम, 1100 प्रतियाँ
लागत मूल्य	:	20/-
प्राप्ति स्थान	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना संपर्क–94251-28817
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

बा. ब्र. पंकज जैन रामनगर

अखिल भारतीय महिला महासमिति

एवं

पाठशाला परिवार चन्देरी

अंतर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर प्रस्तुत कृति 'लघु जिनवाणी' के प्रेरणास्रोत अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत परमपूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज ने करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति में मुनिश्री के द्वारा रचित पूजायें एवं भक्तियाँ व भावनायें सम्मिलित हैं।

यह कृति उन श्रावकों के लिए है जो पूजा तो करना चाहते हैं परन्तु पूजन के क्रम आदि की जानकारी के अभाव में वे संकोच करके रह जाते हैं या समयाभाव के कारण नहीं कर पाते हैं। यह कृति श्रावक के षडावश्यक कर्तव्य में प्रथम कर्तव्य को पूर्ण करने में सहयोगी बनेगी। पाठशाला में बच्चों को पूजन संस्कार देने में भी यह कृति उपयोगी सिद्ध होगी। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा.ब्र. संजय, मुरैना

विषय सूची

विषय	पृ. क्र.
1. मंगल भावना	5
2. मंगलाष्टक	6
3. अभिषेकपाठ (संस्कृत)	8
4. अभिषेक पाठ (हिन्दी)	14
5. अभिषेक स्तुति	17
6. अभिषेक गीत	18
7. वृहद् शांतिधारा	19
8. अभिषेक आरती	22
9. पूजन पीठिका	25
10. लघु पूजन पीठिका	30
11. समुच्चय पूजन	33
12. नवदेवता पूजन	37
13. अर्घ्यावली	41
14. पंचमहागुरु भक्ति भावानुवाद	47
15. आचार्य श्री विद्यागुरु बुंदेली पूजन-आरती	48
16. मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन-आरती	55
17. महाऽर्घ्य-शांतिपाठ-विसर्जन	59
18. महाऽर्घ्य-शांतिपाठ-विसर्जन (प्राचीन)	62
19. आलोचना पाठ	65
20. सुप्रभात स्तोत्र (भावानुवाद)	66
21. दर्शन पाठ (दोहा)	68
22. दर्शन पाठ (चौपाई)	69
23. भक्तामर भाषा	70
24. महावीराष्टक भावानुवाद (चौपाई)	75
25. गोम्मटेश अष्टक भावानुवाद (चौपाई)	76
26. पंचपरमेष्ठी आरती-भजन	77
27. नवदेवता पूजन (अंग्रेजी)	78

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पञ्च णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥1॥ तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥2॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥3॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥4॥ तेरा...

===

मंगलाचरण

मंगलं भगवान्नर्हन् मंगलं सुसिद्धेश्वरः,
मंगलं श्रमणाचार्यो मंगलं साधुपाठकौ।
मंगलं जिननामानि मंगलं नवदेवता,
मंगलं शाश्वतमन्त्रं मंगलं जिनशासनं॥

मंगलाष्टक स्तोत्र

[अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या जिन-शासनोन्- -नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त-सुपाठका मुनिवरा रत्नत्रया-राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु ते (मे) मङ्गलम्॥]
श्रीमन्-नम्र-सुरा-सुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत-रत्नप्रभा-,
भास्वत्-पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम् -भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्य-नुगतास्-ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगि-जनैश्च पञ्चगुरवः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥1॥
सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्त-ममलं रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति - श्री - नगराऽधिनाथ-जिनपत्-युक्तोऽपवर्ग-प्रदः।
धर्मः सूक्ति-सुधा च चैत्य-मखिलं चैत्यालयं श्रयालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध-ममी कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥2॥
नाभेयादि - जिनाः प्रशस्त-वदनाः-ख्याताश्-चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर-प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति-विष्णु-लाङ्गलधराः सप्तोतरा विंशतिस्-
त्रैकाल्ये प्रथितास्-त्रिषष्टि-पुरुषाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम्॥3॥
ये सर्वौषधि-ऋद्धयः सुतपसां वृद्धिङ्गताः पञ्च ये,
ये चाष्टाङ्ग-महा-निमित्त-कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पञ्चज्ञान-धरास्-त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धि-ऋद्धीश्वराः,

सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥4॥
ज्योतिर्-व्यन्तर-भावनाऽ-मरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्य-शाखिषु तथा वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकार-गिरौ च कुण्डल-नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥5॥
कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य-सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेर्-हताम्।
शेषाणा-मपि चोर्जयन्त-शिखरे, नेमीश्वरस्-यार्हतो,
निर्वाणा-वनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥6॥
सर्पो हारलता भवत्-यसिलता सत्पुष्प-दामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न-मनसः किं वा बहु ब्रूमहे,
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥7॥
यो गर्भाऽ-वतरोत्सवो भगवतां जन्माऽभिषे-कोत्सवो,
यो जातः परि-निष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्य-पुरप्रवेश-महिमा संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मङ्गलम् ॥8॥
इत्थं श्री जिन-मंगलाष्टक-मिदं सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्-तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च-सुजनैर्-धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मी-राश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मी-रपि॥
[विद्यासागर विश्ववंद्य श्रमणं, भक्त्या सदा संस्तुवे।
सर्वोच्चं यमिनं विनम्य परमं, सर्वार्थ-सिद्धिप्रदं॥
ज्ञानध्यान-तपोभिरक्त-मुनिपं, विश्वस्य विश्वाश्रयं।
साकारं श्रमणं विशालहृदयं, सत्यं शिवं सुन्दरं॥]

(पुष्पांजलिं...)

जलशुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि-महापुण्डरीक-पुण्डरीक-गङ्गासिन्धु-रोहिद्रोहितास्या-हरिद्धरिकान्ता - सीतासीतोदा - नारीनरकान्ता - सुवर्णरूप्यकूला - रक्तारक्तोदा क्षीराम्भोनिधि-जलं सुवर्णघटप्रक्षिप्तं नवरत्नगन्धाक्षत-पुष्पार्चितामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा इति मंत्रेण प्रसिञ्च्य जलपवित्रीकरणम्।

(जल की शुद्धि करके कलशों में जल भरें)

अमृत स्नान

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्त्रावय स्त्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय हं सं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

पात्र शुद्धि

(अनुष्टुभ्)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

तिलक लगाना

(उपजाति)

पात्रेऽर्पितं चन्दनमोषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाहृच्-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वाङ्गशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। (नवतिलक करें)

अभिषेक पाठ

(आचार्य माघनन्दीकृत)

(वसन्ततिलका)

श्रीमन्-नतामर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति
तोयावभासि - चरणाम्बुज - युग्ममीशम्।

अर्हन्तमुन्नत - पद - प्रदमाभिनम्य-,
तन्मूर्ति - षूद्यदभिषेक - विधिं करिष्ये॥

अथ पौर्वाह्णिक (माध्याह्निक/आपराह्णिक) देववन्दनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण सकलकर्म-क्षयार्थं भावपूजा-वन्दना-स्तव-समेतं श्रीपञ्चमहागुरुभक्ति-कायोत्सर्गं करोम्यहम्। (नौ बार णमोकार मंत्र)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमा जिनस्य
संस्नापयन्ति पुरुहूत-मुखादयस्ताः।
सद्भाव-लब्धि-समयादि-निमित्त-योगात्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-प्रतिज्ञायै पुष्पांजलिं क्षिपामि।

(इन्द्रवज्रा)

श्री पीठक्लृप्ते विशदाक्षतोघैः, श्रीप्रस्तरे पूर्ण-शशाङ्ककल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्रमसीति वार्तां, सत्यापयन्तीं श्रियमालिखामि॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकारलेखनं करोमि। (अभिषेक की थाली में श्रीकार लिखें)

(अनुष्टुभ्)

कनकाद्रिनिभं कम्रं पावनं पुण्य-कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं जिनस्नपनाय भक्तितः॥

ॐ ह्रीं पीठ (सिंहासन) स्थापनं करोमि। (सिंहासन स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

भृङ्गार - चामर - सुदर्पण-पीठ-कुम्भ-
तालध्वजातप - निवारक - भूषिताग्रे।
वर्धस्व नन्द जयपाठ-पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्त-महं श्रयामि॥

(अनुष्टुभ्)

वृषभादि-सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णुचर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

ॐ ह्रीं श्रीधर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(श्रीजी विराजमान करें)

(वसन्ततिलका)

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य - विधौ - सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि-वारिभि-रपूरय-दुद्‌ध-कुम्भान्।
यांस्तादृशानिव विभाव्य यथार्हणीयान्,
संस्थापये कुसुम-चन्दन-भूषिताग्रान्॥

(अनुष्टुभ्)

शात-कुम्भीय-कुम्भौघान् क्षीराब्धेस्तोय-पूरितान्।
स्थापयामि जिनस्नान-चन्दनादि-सुचर्चितान्॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु चतुःकलशस्थापनं करोमि।

(चारों कोनों में जल के कलश स्थापित करें)

(वसन्ततिलका)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि-गानै-
र्वादित्र-पूर-जय - शब्द-कलप्रशस्तैः।
उद्‌गीयमान-जगतीपति - कीर्ति - मेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन-योल्लसामि॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ-स्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ायें)

(निम्न शलोक पढ़कर जल की धारा करें)

कर्म-प्रबन्ध-निगडै-रपि हीनताप्तम्
ज्ञात्वापि भक्ति-वशतः परमादि-देवम्।
त्वां स्वीय-कल्मष-गणोन्मथनाय देव!
शुद्धौदकै-रभिनयामि महाभिषेकं[१]॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

(अनुष्टुभ्)

तीर्थोत्तम-भवैर्नीरैः क्षीर-वारिधि-रूपकैः।
स्नापयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थ-सिद्धिदान्॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

लघुशांति-मंत्र

(मालिनी)

सकल-भुवन-नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्दै-
रभिषव-विधि-माप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषवन-वारां बिन्दु-रेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विधातुं भुक्तिसन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥

(यहाँ चारों कलशों से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं वं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं झं इवीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति वृहच्छान्तिमन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवंतं कृपालसन्तं श्री वृषादिवीरान्तान् चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवान् आद्यानाम् आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नगरे... मासोत्तममासे ....पक्षे .....तिथौ...वासरे मुनिआर्यिकाणां श्रावकश्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं जलादभिषेकं करोमिति स्वाहा।

(वसन्ततिलका)

छत्र त्रयं तव विभाति शशाङ्क-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानु-कर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत्-त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये छत्रत्रयं स्थापयामि स्वाहा। (छत्र स्थापित करें)

कुन्दावदात-चल-चामर-चारु शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।

उद्यच्छशाङ्क-शुचिनिर्झर - वारि-धारि-
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम्॥

ॐ ह्रीं प्रातिहार्ये चमरद्वयं स्थापयामि स्वाहा। (चँवर स्थापित करें)

पानीय-चन्दन - सदक्षत-पुष्पपुञ्ज-
नैवेद्य-दीपक - सुधूप-फल-व्रजेन।
कर्माष्टक-क्रथन - वीर-मनन्त-शक्तिं,
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं...। (अर्घ्य चढ़ायें)

हे तीर्थपा! निज-यशो-धवली-कृताशाः,
सिद्धौशधाश्च भवदुःख-महा-गदानाम्।
सद्भव्य-हृज्जनित-पङ्क-कबन्ध-कल्पाः,
यूयं जिनाः सतत-शान्तिकरा भवन्तु॥

(पुष्पांजलिं...)

नत्वा मुहुर्निज-करै-रमृतोप-मेयैः,
स्वच्छै-र्जिनेन्द्र तव चन्द्र-करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त-रम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्ब-मार्जनं करोमि। (श्रीजी का परिमार्जन करें)

स्नानं विधाय भवतोष्ट-सहस्र-नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु-रिष्ट-मिन तेऽष्ट-मयीं विधातुं,
सिंहासने विधि-वदत्र निवेशयामि॥

ॐ ह्रीं सिंहासने जिनबिम्बं स्थापयामि। (वेदी में श्रीजी विराजमान करें)

(अनुष्टुभ्)

जल-गन्धाक्षतैः पुष्पैश्चरु-दीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेजन्मदुःखापहानये॥

ॐ ह्रीं पीठस्थितजिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा। (अर्घ्य चढ़ायें)

(वसन्ततिलका)

नत्वा परीत्य निज-नेत्र-ललाटयोश्च,
व्याप्तं क्षणेन हरतादघ-सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते! तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप-हरं धृत-मादरेण॥

(शार्दूलविक्रीडित)

मुक्तिश्री-वनिताकरोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं,
नागेन्द्र-त्रिदशेन्द्रचक्रपदवी - राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान-चरित्र-दर्शन-लता-संवृद्धि-सम्पादकं,
कीर्तिश्री-जयसाधकं तव जिन! स्नानस्य गन्धोदकम्॥

ॐ ह्रीं जिनगंन्धोदकं स्वललाटे धारयामि। (उत्तमाङ्ग पर गंधोदक धारण करें)

(शिखरिणी)

इमे नेत्रे जाते सुकृत-जलसिक्ते सफलिते,
ममंदं मानुष्यं कृतीजन-गणादेय-मभवत्।
मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर-कर्माटन-मभूत्,
सदेदृक् पुण्यौघो मम भवतु ते पूजनविधौ॥

(पुष्पांजलिं...)

॥ इति अभिषेक क्रिया समाप्तं ॥

===

अभिषेक पाठ

(पं. जसहर राय कृत) (दोहा)

जय जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान।
वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, नमूँ जोरि जुगपान॥

(अडिल्ल)

श्री जिन जग में ऐसो को बुधवंत जू।
जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू॥
इंद्रादिक सुर चार ज्ञानधारी मुनी।
कहि न सकै तुम गुणगण हे त्रिभुवन-धनी॥

(हरिगीतिका)

अनुपम अमित तुम गुणनिवारिधि, ज्यों अलोकाकाश है।
किमि धरैं हर उर कोष में सो अकथ-गुण-मणि-राश है॥
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम नाम में ही शक्ति है।
यह चित्त में सरधान यातैं, नाम ही में भक्ति है॥1॥

ज्ञानावरणी दर्शन-आवरणी भने।
कर्म मोहनी अंतराय चारों हने॥
लोकालोक विलोक्यो केवलज्ञान में।
इंद्रादिक के मुकुट नये सुरथान में॥

तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरन-युत वंदत भयौ।
तुम पुण्य को प्रेरयो हरी ह्वै, मुदित धनपति सौं कह्यौ॥
अब वेगि जाय रचौ समवसृति, सफल सुरपद को करौ।
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन करौ कल्मष हरौ॥2॥

ऐसे वचन सुने सुरपति के धनपती।
चल आयो तत्काल मोद धारै अती॥
वीतराग छवि देखि शब्द जय जय चयौ।

दे प्रदच्छिना बार-बार वंदत भयौ॥
अति भक्ति-भीनो नम्र-चित है, सवसरण रच्यौ सही।
ताकी अनूपम शुभ गती को, कहन समरथ कोउ नहीं॥
प्राकार तोरण सभामण्डप, कनक मणिमय छाजहीं।
नग-जड़ित गंधकुटी मनोहर मध्यभाग विराजहीं॥3॥

सिंहासन तामध्य बन्यौ अद्भुत दिपै।
ता पर वारिज रच्यो प्रभा दिनकर छिपै॥
तीन छत्र सिर शोभित चौंसठ चमर जी।
महा भक्तिजुत ढोरत हैं तहाँ अमर जी॥

प्रभु तरनतारन कमल ऊपर, अन्तरीक्ष विराजिया।
यह वीतराग दशा प्रतच्छ, विलोकि भविजन सुख लिया॥
मुनि आदि द्वादश सभा के भवि, जीव मस्तक नायकैं।
बहुँ भाँति बारम्बार पूजें, नमैं गुण गण गायकैं॥4॥

परमौदारिक दिव्य देह पावन सही।
क्षुधा तृषा चिंता भय गद दूषण नहीं॥
जन्म जरा मृति अरति शोक विस्मय नसे।
राग रोष निद्रा मद मोह सबै खसे॥

श्रम बिना श्रमजल रहित पावन, अमल ज्योति-स्वरूप जी।
शरणागतनिकी अशुचिता हरि, करत विमल अनूप जी॥
ऐसे प्रभु की शान्तमुद्रा को न्हवन जलतैं करैं।
'जस' भक्तिवश मन उक्ति हैं, हम भानु ढिंग दीपक धरैं॥5॥

तुम तौ सहज पवित्र यही निचय भयो।
तुम पवित्रता हेत नहीं मज्जन ठयो॥
मैं मलीन रागादिक मलतैं ह्वै रह्यो।
महा मलिन तन में वसुविधि वश दुख सह्यो॥

बीत्यो अनंतों काल यह, मेरी अशुचिता ना गई।
तिस अशुचिता हर एक तुम ही, भरहुँ वांछा चित ठई॥
अब अष्टकर्म विनाश सब मल, रोष-रागादिक हरौ।
तनरूप कारागेह तैं उद्धार शिव वासा करौ॥6॥

मैं जानत तुम अष्टकर्म हरि शिव गये।
आवागमन विमुक्त राग-वर्जित भये॥
पर तथापि मेरो मनरथ पूरत सही।
नय-प्रमाण तैं जानि महा साता लही॥

पापाचरण तजि न्हवन करता, चित्त में ऐसे धरूँ।
साक्षात श्री अरहंत का मानों, न्हवन परसन करूँ॥
ऐसे विमल परिणाम होते, अशुभ नसि शुभबंधतैं।
विधि अशुभ नसि शुभबंधतैं ह्वै, शर्म सब विधि नासतैं॥7॥

पावन मेरे नयन भये तुम दरसतैं।
पावन पानि भये तुम चरननि परसतैं॥
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यान तैं।
पावन रसना मानी तुम गुणगान तैं॥

पावन भई परजाय मेरी, भयौ मैं पूरण-धनी।
मैं शक्तिपूर्वक भक्ति कीनी, पूर्णभक्ति नहीं बनी॥
धन धन्य ते बड़भागि भवि तिन, नींव शव-घर की धरी।
वर क्षीरसागर आदि जल मणिकुंभ भर भक्ती करी॥8॥

विघन-सघन-वन-दाहन-दहन-प्रचण्ड हो।
मोह-महा-तम-दलन प्रबल मारतण्ड हो॥
ब्रह्मा विष्णु महेश आदि संज्ञा धरौ।
जग-विजयी जमराज नाश ताको करौ॥

आनन्द-कारण दुख-निवारण, परम मंगलमय सही।
मोसों पतित नहिं और तुमसों, पतित-तार सुन्यौ नहीं॥

चिंतामणी पारस कल्पतरु, एक भव सुखकार ही।
तुम भक्ति-नवका जे चढ़े ते, भये भवदधि पार ही॥9॥

(दोहा)

तुम भवदधि तैं तरि गये, भये निकल अविकार।
तारतम्य इस भक्त को, हमें उतारौ पार॥10॥

अभिषेक स्तुति

(लय—जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ-हाँ-2, सब- रोज कराओ रे॥ प्रासुक...
1. ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ-2, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...
2. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ-2, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...
3. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ-2, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...
4. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ-2, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...
5. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ-2, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...
6. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ-2, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक गीत

जल्दी-जल्दी चलो रे मंदिर, अपना फर्ज निभाने को।
प्रासुक जल से भरो कलशियाँ, प्रभु का न्हवन कराने को॥
जो अभिषेक कराके मैना, पति का कुष्ट मिटाई थी।
जिसके द्वारा श्रीपाल ने, कंचन काया पाई थी॥
जिससे हुए सात सौ सुंदर, वो ही गाथा गाने को।
प्रासुक जल से....
जिस अभिषेक को करके सुरगण, करें महोत्सव स्वर्गों में।
कृत्रिमा-कृत्रिम बिम्ब पूजकर, करें पर्व जिन-भवनों में॥
देवों जैसे करके नमोऽस्तु, आये शीश झुकाने को।
प्रासुक जल से....
श्री जिन का अभिषेक न्हवन कर, दुख कष्टों का कीच हटे।
ऋद्धि-सिद्धि की बात कहें क्या?, मैली आतम चमक उठे॥
रोग शोक भय संकट हर के, वीतरागता पाने को।
प्रासुक जल से....
जिन-अभिषेक महापुण्यों से, बड़भागी कर पाते हैं।
देह शुद्ध कर लेकर कलशे, श्री जी का न्हवन कराते हैं॥
पाप नशा के पुण्य कमा के, भाग्य कमल महकाने को।
प्रासुक जल से....
हमने अपना फर्ज निभाया, भक्त पुजारी बनने का।
तू भी अपना फर्ज निभाले, हम को निज सम करने का॥
'सुव्रत' को आशीष मिले बस, आतम 'विद्या' पाने को।
प्रासुक जल से...।

===

वृहत्-शांतिधारा

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ध्वीं ध्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते। ॐ ह्रीं क्रौं मम पापं खण्डय खण्डय जहि जहि दह दह पच पच पाचय पाचय ॐ नमो अर्हं झं ध्वीं क्ष्वीं हं सं झं वं ह्वः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्वां ह्रीं ह्वूं ह्वें ह्वैं ह्वों ह्वौं ह्वं ह्वः द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः **अस्माकं (धारा करने वाले का नाम)** श्रीरस्तु वृद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कान्तिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा। एवं **अस्माकं** कार्यसिद्ध्यर्थं सर्वविघ्न-निवारणार्थं श्रीमद्भगवदर्हत्सर्वज्ञ-परमेष्ठि-परम-पवित्राय नमो नमः। **अस्माकं** श्रीशान्तिभट्टारकपादपद्म-प्रसादात् सद्धर्म-श्री-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य-अभिवृद्धिरस्तु सद्धर्म-स्वशिष्य-परशिष्य-वर्गाः प्रसीदन्तु नः।

ॐ श्रीवृषभादयः श्रीवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशत्यर्हन्तो भगवन्तः सर्वज्ञाः परममङ्गलनामधेया **अस्माकं** इहामुत्र च सिद्धिं तन्वन्तु सद्धर्मकार्येषु इहामुत्र च सिद्धिं प्रयच्छन्तु नः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्व-तीर्थंकराय, श्रीमद्रत्नत्रय-रूपाय दिव्यतेजोमूर्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादश-गणसहिताय, अनंतचतुष्टय-सहिताय समवसरणकेवलज्ञान लक्ष्मी-शोभिताय अष्टादश-दोष-रहिताय षट्चत्वारिंशद्गुण-संयुक्ताय परमेष्ठि-पवित्राय सम्यग्ज्ञानाय स्वयंभुवे सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परमसुखाय, त्रैलोक्य-महिताय, अनंत-संसारचक्र-प्रमर्दनाय, अनंत-ज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्य-वशङ्कराय, सत्य-ज्ञानाय, सत्य-ब्रह्मणे, उपसर्ग-विनाशनाय, घातिकर्म-क्षयङ्कराय अजराय अभवाय **अस्माकं** व्याधिं घ्नन्तु। श्रीजिनाभिषेक-पूजन-प्रसादात् **अस्माकं** सेवाकानां सर्वदोष-रोग-शोक-भय-पीड़ाविनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्व-रोगाप-मृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रवविनाशनाय सर्वारिष्ट-शान्ति-कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्नशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं-पुष्टिं च कुरु-कुरु स्वाहा। **मम (अस्माकं) कामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **रतिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **बलिकामं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **क्रोधं-पापं-वैरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अग्निवायुभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशत्रुविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वोपसर्गं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वविघ्नं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराज्यभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वचौरदुष्टभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसर्पवृश्चिक-सिंहादिभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वग्रहभयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदोषं व्याधिं डामरं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वपरमन्त्रं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वात्मघातं परघातं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वशूलरोगं कुक्षिरोगं अक्षिरोगं शिरोरोगं ज्वररोगं च** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्व नरमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वगजाश्व-गोमहिषाजमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वक्रूर-वेताल-शाकिनी-डाकिनीभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्ववेदनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वमोहनीयं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वापस्मारिं** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **अस्माकं अशुभकर्म-जनितदुःखानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-

भिन्दि। **दुष्टजन-कृतान् मन्त्र-तन्त्र-दृष्टि-मुष्टि-छलछिद्रदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वदुष्टदेवदानव-वीरनरनाहर-सिंह-योगिनीकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वाष्टकुली - नागजनित-विषभयानि** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **सर्वस्थावर-जङ्गम-वृश्चिक-सर्पादिकृतदोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि। **परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि-कृत-दोषान्** छिन्दि-छिन्दि, भिन्दि-भिन्दि।

ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र- विक्रम- सत्त्वतेजो- बलशौर्य- वीर्य-शान्तिः पूरय पूरय। सर्वजीवानन्दनं जनानन्दनं भव्यानन्दनं गोकुलानन्दनं च कुरु-कुरु। सर्वराजानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तन-द्रोणमुख-संवाहानन्दनं कुरु-कुरु। सर्वानन्दनं कुरु-कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोऽस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। **अस्माकं** तुष्टिरस्तु। पुष्टिरस्तु। समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। अभिवृद्धिरस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्रधनानि सदा सन्तु। सद्धर्मश्रीबलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वशान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

आयुर्वल्लीविलासं सकलसुखफलैर्द्राघयित्वाश्वनल्पं।
धीरं वीरं गभीरं निरुपममुपनयत्वातनोत्वच्छकीर्तिम्॥
सिद्धिं वृद्धिं समृद्धिं प्रथयतु तरणिः स्फूर्यदुच्चैः प्रतापं।
कान्तिं शान्तिं समाधिं वितरतु जगतामुत्तमा शान्तिधारा॥
सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवज्जिनेन्द्रः॥

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

1. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

2. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

3. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

4. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुये मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

5. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

6. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

7. अभिषेक आरती पूजायें, सौभाग्य पुण्य से मिल पायें।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पायें मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

नित्य नियम पूजन प्रारम्भ

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज ॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार ॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निजगुण रास ॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग-भूप ॥5॥
मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव ॥6॥
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार ॥7॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल ॥8॥
तुम पद-पंकज पूजतैं , विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥9॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥10॥

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥12॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥13॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव ॥14॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥15॥
तुमको पूजैं सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान ॥18॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार ॥19॥
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातैं करौं पुकार ॥20॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय ॥22॥

मंगलपाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान् ॥23॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव ॥24॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय ॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरण, हरो असाता कर्म ॥26॥
या विधि मंगल करन तें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत ॥27॥

(पुष्पांजलिं...) (नौ बार णमोकार)

पूजन पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं...)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्त मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्त लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू
लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहन्त सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं
पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं...)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच-नमस्कारं, सर्व-पापैः प्रमुच्यते॥ 1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥ 2॥
अपराजित-मन्त्रोऽयं सर्व-विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु , प्रथमं मंगलं मतः॥ 3॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व-पावप्प-णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्॥ 4॥
अर्हं-मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥ 5॥
कर्माष्टक-विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रम् नमाम्यहं॥ 6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥ 7॥

(पुष्पांजलिं...)

पंचकल्याणक अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनकल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिन इष्ट(नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं...।

जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं...।

तत्त्वार्थसूत्र जी अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे जिनस्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भक्तामर स्तोत्राय एवं समस्त जिन-स्तोत्रेभ्यो अर्घ्यं...।

तीन कम नौ कोटि मुनिराज अर्घ्य

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिनगृहे मुनिराज महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अर्घ्यं...।

पूजा-प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद्-नायक-मनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥ १॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जित-दृङ्मयाय,

स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय॥ २॥
स्वस्त्युच् छल-द्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद् गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय॥ ३॥
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्ययथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्य-वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥ ४॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून् यनून मखिलान्य यमेक एव।
अस्मिञ्ज्वलद् विमल-केवल-बोध-वह्नौ,
पुण्यं समग्र मह मेक मना जुहोमि॥ ५॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअभिनन्दनः॥
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः॥
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः॥
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः॥

श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः॥
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः॥

(पुष्पांजलिं...)

परमर्षि स्वस्ति मंगल-पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकंपाद्-भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः।
दिव्यावधिज्ञान बल प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 1॥

कोष्ठस्थ धान्योप-ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद-नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धाः दशसर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 4॥

जंघानल श्रेणी फलांबु तंतु, प्रसून बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽगण स्वैर विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 5॥

अणिम्नि दक्षा कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपु र्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 6॥

सकाम रूपित्व वशित्व मैश्यं, प्राकाम्य मन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर परा क्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी-र्विषाविषाः दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 9॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो, मधु स्रवंतो ऽप्य मृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥ 10॥

(इति परमर्षिंस्वस्ति मंगल विधानं परि पुष्पांजलिं...)

[समय कम होने पर या संस्कृत पढ़ने में कठिनाई होने पर यह लघु पूजन पीठिका भी पढ़ सकते हैं अथवा पूजन प्रारंभ करें]

लघु पूजन पीठिका

विनय-पाठ (दोहा)

मन वच तन पावन बना, आया मैं प्रभु - द्वार।
जिन-सूरज जिन-चन्द्र को, नमोऽस्तु बारम्बार॥ 1॥
कर्मों के हर्त्ता तुम्हीं, मुक्ति रमा के नाथ।
वीर! तीर संसार के, तुम्हीं त्रिलोकी नाथ॥ 2॥
आतम वैभव के धनी, तुम धर्मी गुणवान।
स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, तुम्हीं पूज्य भगवान्॥ 3॥
भक्तों को तुम तारते, तारण-तरण जहाज।
मुझको भी तारो तुम्हीं, कृपा सिंधु जिनराज॥ 4॥
नाथ! आपका नाम भी, कष्ट विघ्न हर्त्तार।
मुझ पर भी करुणा करो, कर दो अब उद्धार॥ 5॥
जन्मादिक व्याधीं हरो, मैं आया हूँ पास।
कर्म बंध से मुक्ति दो, देकर कुछ संन्यास॥ 6॥
तुमरा वैभव देखकर, दास हुआ संसार।
मैं तो बस विनती करूँ, महिमा अपरम्पार॥ 7॥
जल बिन ज्यों मछली हुयी, चाँद बिना ज्यों रात।
वैसे तुम बिन मैं हुआ, बालक ज्यों बिन मात॥ 8॥

नमूँ-नमूँ ओंकार को, वन्दूँ जिन चौबीस।
देवशास्त्रगुरु को नमूँ, हो मंगल आशीष॥ 9॥
परमेष्ठी पाँचों नमूँ, नमूँ-नमूँ नवदेव।
भूत भविष्यत आज के, वन्दूँ प्रभु जिनदेव॥ 10॥
मंगल-मंगल बोल हों, मंगल-मंगल ध्यान।
मंगलमय 'सुव्रत' रहें, हो सबका कल्याण॥ 11॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (९ बार णमोकार)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु ! नमोऽस्तु!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पाञ्जलिं...)

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं सिद्धा मंगलं साहू मंगलं केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा अरिहंता लोगुत्तमा सिद्धा लोगुत्तमा साहू लोगुत्तमा केवलि-पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि अरिहंते सरणं पव्वज्जामि सिद्धे सरणं पव्वज्जामि साहू सरणं पव्वज्जामि केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं...)

(ज्ञानोदय)

पहला मंगल अपराजित यह, सभी विघ्न हरने वाला।
णमोकार यह मंत्र सदा ही, पाप नाश करने वाला॥
सुस्थित दुस्थित सभी दशा में, णमोकार जो ध्याते हैं।
पाप नशा भीतर बाहर से, पावन बन सुख पाते हैं॥

(दोहा)

अर्हम् सिद्ध समूह जो, सगुण मुक्ति के धाम।
कर्म रहित परमेश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥

श्री जिनवर की वन्दना, हरती विघ्न समूल।
भूत शाकिनी सर्प भय, हरे जहर का शूल॥

(पुष्पांजलिं..)

पाँचों कल्याणक नमूँ, जिनवाणी जिननाम।
अर्घ चढ़ा परमेश को, सादर करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचकल्याणक-पंचपरमेष्ठी-जिनसहस्त्रनाम-जिनसूत्रेभ्यो अर्घं...।

पूजा प्रतिज्ञापाठ (ज्ञानोदय)

तीनलोक के स्वामी गुरुवर, नन्त चतुष्टय के धारी।
ज्ञान-सूर्य सर्वज्ञ हितैषी, समवसरण वैभवधारी॥
श्री अर्हन् की पूजा करने, द्रव्य शुद्ध कर मैं लाया।
ज्ञान हवन में पुण्य होमकर, भाव शुद्ध करने आया॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं...।

स्वस्ति मंगलपाठ

(ज्ञानोदय)

स्वस्ति हों श्री वृषभनाथ जी, अजितनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री शंभवनाथ जी, अभिनंदन जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री सुमतिनाथ जी, पद्मप्रभ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री सुपार्श्वनाथ जी, चंद्रप्रभ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री पुष्पदंत जी, शीतलनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री श्रेयांसनाथ जी, वासुपूज्य जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री विमलनाथ जी, अनंतनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री धर्मनाथ जी, शांतिनाथ जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री कुंथुनाथ जी, अरनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री मल्लिनाथ जी, मुनिसुव्रत जी स्वस्ति हों॥

स्वस्ति हों श्री नमिनाथ जी, नेमिनाथ जी स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों श्री पार्श्वनाथ जी, महावीर जी स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों चौबीसों स्वामी, देव-शास्त्र-गुरु स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों पाँचों परमेष्ठी, नवों देवता स्वस्ति हों॥
स्वस्ति हों श्री जिनशासन जी, धर्म अहिंसा स्वस्ति हों।
स्वस्ति हों 'सुव्रतसागर' के, 'विद्यागुरुवर' स्वस्ति हों॥

(पुष्पांजलिं..)

परमर्षि स्वस्ति मंगलपाठ (दोहा)

चौंषठ-चौंषठ ऋद्धियाँ, परमर्षि-ऋषिराज।
मंगल हम सबका करें, करें हृदय पर राज॥

(इति परमर्षिस्वस्तिमंगलविधानं परिपुष्पांजलिं...)

समुच्चय पूजन

स्थापना (दोहा)

देव शास्त्र गुरु साथ में, तीर्थंकर प्रभु बीस।
सिद्धचक्र भी पूज लें, कर नमोऽस्तु नत शीश॥

(ज्ञानोदय)

है संसार मोह का दल-दल, जिनशासन का महल मिले।
देवशास्त्रगुरु बीसों जिनवर, सिद्धचक्र का कमल खिले॥
चरणकमल की करने पूजा, हृदय कमल पर बुला रहे।
कर-कमलों का आशिष पाने, कर नमोऽस्तु सिर झुका रहे॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठी जिन समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अनादिकाल से सागर तपते, नदी वहे बादल बरसे।
फिर भी देह न शुद्ध हुई सो, रत्नत्रय जल को तरसे॥

निर्मल रत्नत्रय जल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

राग-द्वेष से झुलस रहे हम, तुम बिन कौन बचायेंगे।
अगर बचाया तो चंदन सम, हम शीतल हो जायेंगे॥
जिनशासन की छाया पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

जग में ऐसे जीव गुमे ज्यों, गुमे मरुस्थल में जीरा।
हमें थाम के नाथ! बचा लो, बन जायें अक्षत हीरा।
आत्मज्ञान का वैभव पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

भोग वासनाओं में अब तक, शांति किसी को मिली नहीं।
बिना साधनाओं के जग में, आत्म कली भी खिली नहीं॥
काम भोग का राग त्यागने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कितने भोजन पान किये पर, भूख मिटी ना तृप्त हुए।
फिर भी भोजन त्याग सके ना, ना निज में अनुरक्त हुए॥
भूख मिटाने निज रस पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

हम क्यों भटके हम क्यों भूले, कारण मोह अँधेरा है।
शरणागत को राह दिखा दो, फिर तो ज्ञान सबेरा है॥
मोह मिटाने दीप जला के, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

धूप अनल में खेकर हमको, कर्म जलाने पंथ मिलें।
राग द्वेष जल जायेंगे तो, मोक्षदातृ अरिहंत मिलें॥
कर्म जलाने धूप चढ़ाके, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

जड़-फल जब निस्सार लगे तो, इन्हें चढ़ाने आ धमके।
'पुण्यफला अरिहंता' बनके, चखें मोक्ष फल आतम के॥
दुर्लभ महामोक्ष फल पाने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अष्टम वसुधा जिनने पायी, अष्ट द्रव्य वो चढ़ा चुके।
सो अष्टम वसुधा पाने हम, अष्ट द्रव्य ले झुके-झुके॥
अर्घ्य चढ़ाकर अनर्घ बनने, वन्दन देव शास्त्र गुरु को।
विद्यमान बीसों प्रभु पूजें, सिद्धचक्र को नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

देव-शास्त्र-गुरु बीस जिन, सिद्धचक्र भगवंत।
जिन्हें पृथक वा साथ में, नमोऽस्तु नन्तानंत॥

(भुजंगप्रयात)

महादेव अर्हंत् स्वामी हमारे, नशा घातिया कर्म संसार तारें।
सभी सिद्ध स्वामी, बने मोक्षधामी, जिन्हें पूजके भक्त हों मोक्षगामी ॥1॥
यही वीतरागी गुणी हैं हितैषी, नहीं कामि क्रोधी, नहीं रागि द्वेषी।
अतः शांति के मंत्र दे भक्त तारें, हमें क्यों विसारे, हमें शीघ्र तारें ॥2॥
कहें देव अर्हंत जो तत्त्व साँचे, उन्हें गूँथ के ग्रंथ आचार्य वाँचें।
अनेकांत रूपी स्याद्वाद वाणी, इसे थाम खोजें चिदानंद प्राणी ॥3॥
उपाध्याय आचार्य निर्ग्रन्थ साधू, करें संयमी रोज अध्यात्म जादू।
ये रत्नत्रयी हैं दिगम्बर विहारी, करें पार नैया विरागी हमारी ॥4॥
विदेही विराजे सु-बीसों जिनेशा, हमें दर्श हों भावना है हमेशा।
यही भावना है यही कामना है, कटें पाप सारे यही प्रार्थना है ॥5॥

(अर्ध ज्ञानोदय)

देव शास्त्र गुरु बीसों जिनवर, सिद्ध अनंतानंत भजें।
सुव्रत बनके संत दिगंबर, मुक्तिवधू के संग सजें॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह विद्यमान बीस तीर्थंकर जिन अनंतानंत सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

देव शास्त्र गुरु प्रभु करें, विश्व शांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, देवशास्त्र गुरु राय॥

(पुष्पांजलिं...)

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनायें गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गये जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमायें जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलायें।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लायें॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसायें, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाये।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगायें, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलायें, हम जिनके आंसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के कांटे, तजने पुष्पों को लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटायी।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलायें, हम काजल जिन्हें लगायें।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखायें॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिरायें, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाये।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुये हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाये।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबायें।
फिर देकर दाग जलायें, हम जिन पर प्राण लुटायें॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ायें।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाये॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वंदन हमारे॥1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुये पूर्ण सपने॥3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानंद हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शांति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति ।।4 ।।
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे ।।5 ।।
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें ।।6 ।।
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो ।।7 ।।
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी ।।8 ।।
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे ।।9 ।।

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पायें तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय संबंधी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनंतानंत सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय—चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य

(सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी संबंधी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य

(शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्रीअजितनाथ स्वामी अर्घ्य

(हरिगीतिका)

पर के कभी कर्त्ता बने, भोक्ता बने स्वामी बने।
अभिमान के ऊँचे हिमालय, पर वसे ऊँचे तने॥
कैसे चढ़ायें अर्घ स्वामी, अर्चना कैसे करें।
हे जिन! करो तुम भक्त निज सम, प्रार्थना इससे करें॥

ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चंद्रप्रभ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आये हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाये हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।

यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शांतिनाथ स्वामी अर्घ्य (मालती)

जब-जब शांति विधान किया ना, तब-तब है हर क्रिया अधूरी।
जब-जब है हर क्रिया अधूरी, तब-तब न कम हो आपस की दूरी॥
जैसे ही शांति विधान रचाये, अंदर से मुक्ति का पाया इशारा।
जिनको सादर करके नमोस्तु, चरणों में अर्पित अर्घ्य हमारा॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बंधन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाये, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्यायें।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जायें॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ायें सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अंबर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पायें निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥

पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिंब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आये।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आये॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमायें फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमहागुरु भक्ति (भावानुवाद)

(चौपाई)

जिन पर सुर नर छत्र लगायें, पाँचों कल्याणक सुख पायें।
प्रभु अरिहंत दान गुण करते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥1॥
ध्यान अग्नि के बाण चलाके, जन्म-मरण दुख नगर जलाके।
शाश्वत मोक्ष सिद्ध प्रभु वरते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥2॥
पंचाचार तपों को साधें, द्वादशांग सागर अवगाहें।
गुरु आचार्य मोक्ष सुख वरते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥3॥
शेर भयंकर वाले वन में, भूल गये जो पथ जीवन में।
उपाध्याय पथ दर्शन करते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥4॥
तप कर देह क्षींण कर डाली, लगा ध्यान लक्ष्मी प्रकटाली।
साधु मोक्षपथ दर्शन करते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥5॥
जो इस तरह पंचगुरु ध्याते, सघन बेल भव दुख की काटें।
कर्म हरण कर शिवसुख वरते, गुण पाने हम नमोऽस्तु करते॥6॥

(दोहा)

अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु, उपाध्याय मुनि साधु।
सुख दायक परमेष्ठी को, 'सुव्रत' करें नमोऽस्तु॥

===

ç3læxéL¤ Õé Îôüè पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

मोरे गुरुवर विद्यासागर, सब जन पूजत हैं तुमखों।
हम सोई पूजन खों आये, तारो गुरु झट्टईं हमखों॥
मोरे हिरदे आन विराजो, हाथ जोड कैं टेरत हैं।
और बाठ जइ हेर रये हम, हँस कैं गुरु कब हेरत हैं ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बाप मतारी दोइ जनौं नैं, बेर-बेर जनमों मोखों।
बालापन गव आइ जुवानी, आव बुढापौ फिर मोखों॥
नर्रा-नर्रा कैं हम मर गये, बात सुनैं नैं कोऊँ हमाई।
जीवौ मरबौ और बुढ़ापौ, मिटा देव मोरो दुखदाई॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

मोरे भीतर आगी बर्रई, हम दिन रात बरत ओं में।
दुनियाँदारी की लपटों में, जूड़ापन नैं पाऔ मैं॥
मोय कबऊँ अपनों नैं मारौ, कबऊँ पराये करत दुखी।
ऐंसी जा भव आग बुझादो, देव सबूरी करौ सुखी॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

कबऊँ बना दव मोखों बड्डौ, आगैं-आगैं कर मारौ।
कबऊँ बना कैं मोखों नन्नौ, भौतइ मोय दबा डारौ॥
अब तौ मोरौ जी उकता गओ, चमक-धमक की दुनियाँ में।
अपने घाँई मोय बना लो, काय फिरा रये दुनियाँ में॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्...।

कामदेव तौ तुमसैं हारौ, मोय कुलच्छी पिटवाबै।

सारौ जग तौ मोरे वश में, पर जौ मोखों हरवाबै॥
हाथ जोड़ कैं पाँव परै हम, गैल बता दो लड़बे की।
ये खौं जीतैं मार भगावैं, बह्मचर्य व्रत धरबे की॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

हम तौ भूखे नैं रै पावैं, लडुआ पेड़ा सब चाने।
लुचईं ठडूला खीच औंरिया, तातौ वासौ सब खाने॥
इनसैं अब तौ भौत दुखी भये, देव मुक्ति इनसैं मोखों।
मोय पिला दो आतम-इमरत, नैवज से पूजत तोखों॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं...

दुनियाँ कौ जो अँधयारौ तौ, मिटा लेत है हर कोऊ।
मोह रऔ कजरारौ कारौ, मिटा सके नैं हर कोऊ॥
ज्ञान-जोत सैं ये करिया कौ, तुमने करिया मौं कर दऔ।
ऊँसईं जोत जगा दो मोरी, दीया जौ सुपरत कर दऔ॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...

खूबइ होरी हमने बारी, मोरी काया राख करी।
पथरा सी छाती बारे जै, करम बरैं नैं राख भयी॥
तुम तौ खूबइ करौ तपस्या, ओइ ताप सैं करम बरैं।
मोय सिखा दो ऐंसे लच्छन, तुम सौ हम भी ध्यान धरैं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

तुम तौ कौनऊँ फल नइँ खाउत, पीउत कौंनऊँ रस नँइयाँ।
फिर भी देखौ कैसे चमकत, तुम जैसो कौंनऊँ नँइयाँ॥
हम फल खाकैं ऊबै नइयाँ, फिर भी चाने शिवफल खौं।
येई सैं तौ चढ़ा रये हम, तुम चरणों में इन फल खौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

ऊँसईं-ऊँसईं अरघ चढ़ा कैं, मोरे दोनऊँ हाथ छिले।
ऊँसईं-ऊँसईं तीरथ करकैं, मोरे दोनऊँ पाँव छिले॥
नैं तो अनरघ हम बन पाये, नैं तीरथ सौ रूप बनौ।
येई सैं तौ तुमें पुकारें, दै दो आतम रूप घनौं॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला-1

(दोहा)

विद्यागुरु सौ कोऊ नैं, जग में दूजौ नाँव।
सबइ जने पूजत जिनैं, और परत हैं पाँव॥
दर्शन पूजन दूर है, इनकौ नाँव महान।
बड़भागी पूजा करैं, और बनावैं काम॥

(ज्ञानोदय)

मल्लप्पा जू के तुम मौड़ा, श्रीमति मैया के लल्ला।
गाँव आपनौ तज कैं देखौ,करौ धरम कौ तुम हल्ला॥
दया धरम कौ डण्डा लै कैं, फैरा रय तुम तौ झण्डा।
ऐसै तुम हौ ज्ञानी ध्यानी, फोरत पापों कौ भण्डा॥१॥
एकईं बिरियाँ ठाडे हो कैं, खात लेत नैं हरयाई।
नौंन मसालौ माल मलीदा, कबउँ खाव नैं गुरयाई॥
जड़कारै में कबऊँ नैं ओढ़ौ, प्यांरौ चारौ और चिटाई।
जेठमास में गर्मी सैनें, पिऔ कबऊँ नैं ठण्डाई॥२॥
तुम बैरागी हौ निरमोही, सच्ची मुच्ची में भज्जा।
बन कैं जिनवाणी के लल्ला, पूजौ जिनवाणी मज्जा॥
सब जग के तुम गुरुवर बन गय, ये में का कैंसौ अचरज।
गुरु के संगै मात-पिता के, गुरु बन गय जौ है अचरज॥३॥

मोय तुमारी चर्या भा गई, तबइ करत अर्चा तोरी।
तीनईं बिरियाँ माला फेरत, रोज करत चर्चा तोरी॥
अर जौ मोरौ पगला मनवा, तुम खौं तज कैं नैं जावै।
कहूँ रमैं नैं जौ बंदरा सौ, उचक-उचक कैं इत आवै॥ ४॥
कबउँ-कबउँ जौ मोरइ बन कैं, खूबइ खूब नचत भैया।
सो सब हम खों कहें दिवानौ, और कैत का-का दैया॥
भौत बडे आसामी तुम तौ, तुम व्यापार करौ नगदी।
सौदा कौ नैं काम करौ तुम, नैं दुकान नैं है गद्दी॥५॥
जग जाहिर मुस्कान तुमारी, तुम सी कला कहूँ नईंयाँ।
नैं कोऊ खों हामी भरते, नाहीं कँबऊँ करत नईंयाँ॥
मूड़ उठा कैं हेरत नईंयाँ, और कैत देखौ- देखौ।
चिटिया जीव-जन्तु दिख जावै, पै भक्तों खों नैं देखौ॥६॥
महावीर कौ समोसरण तौ, राजगिरी पै खूब लगौ।
ऊँसइ बुन्देली में शोभै, संघ तुमारौ खूब बड़ौ॥
करी बड़ेबाबा की सेवा, सो बन गये छोटेबाबा।
काम करौ तुम बड़े - बड़े पै, काय कैत छोटे बाबा॥७॥
कबउँ-कबउँ तौ तुम बोलत हौ, आगम कौ तब ध्यान रखौ।
समयसार खों खूबइ घोकौ, आतम रस खौं खूब चखौ॥
नौंने-नौंने ग्रन्थ रचा दय, भौत बना दय तीरथ हैं।
दुखियों की करुणा खों सुनकैं हाथ दया कौ फेरत हैं॥८॥
ये की का का कथा कहें हम, कबउँ होय जा नैं पूरी।
भक्तों खों भगवान बना कैं, हरलई उनकी मजबूरी॥

इतनौ सब उपकार करत हौ, फिर भी कछू कैत नईंयाँ।
येई सें तौ जग जौ कैरव, तुम सौ कोऊ है नईंयाँ॥९॥
अब किरपा ऐसी कर दइयो, पाँव-छाँव में मोय रखौ।
अपने घाँईं मोय बना लो, अपने से नैं दूर करौ॥
'सुव्रत' की जा अरज सुनीजै,और तनक सौ मुस्कादो।
भवसागर सैं मोरी नैया, झट्टईं-झट्टईं तिरवा दो॥१०॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विद्यासागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

गुण गावैं पूजा करैं, करैं भगति दिन रैन।
बस इत्तइ किरपा करौ, मोय देव सुख चैन॥
तुम तौ बड़े उदार हो, और गुणी धनवान।
पूजा जयमाला करी, मैं मौड़ा नादान॥
विद्यागुरु खों कैत सब, बुन्देली के नाथ।
सो बुन्देली गीत गा, तुमें झुकारय माथ॥

(पुष्पांजलिं)

जयमाला-2

(दोहा)

विद्यागुरु की भक्ति में, धूप लगै नें ठण्ड।
जयमाला में रम रहौ, सांचउं बुन्देलखण्ड॥

(जोगीरासा)

दुनियाँ में सबसे न्यारी है, भारत भूम हमारी।
भारत में बुन्देलखण्ड की, का कैनें बलिहारी॥
जब लौं कौनउं समझ सकौ नें, ये की महिमा न्यारी।

तब लों माटी कूरा जैसी, लुटी-पिटी सी भारी॥१॥
लेकिन जा कैनात सुनें कें, घूरे के दिन फिरबें।
फिर जौ तौ बुन्देलखण्ड है, भाग्य काय नें चमकें॥
जितै कबउं मुनियों के दर्शन, मिलबौ बड़ौ कठिन थौ।
सुनौ इतईं तो चतुर्मास कौ, होवौ लगै सुपन सौ॥२॥
जाड़े में जब परै माइआ, कुकर-कुकर सब जाबें।
ज्वांर बाजरा कोदों खा कें, मौं करिया पर जाबें॥
गेहूँ मिलबौ बड़ौ कठिन थौ, फैली भूख गरीबी।
लगै दण्ड बुन्देलखण्ड जौ, दिखै नें कोउ करीबी॥३॥
महावीर सें अब लों जित्ते, मुनी अज्जका वीरा।
उनमें इक्के दुक्के भए हैं, बुन्देली के हीरा॥
लेकिन बुन्देली पै जबसें, पंइयां परे तुमारे।
साँची कै दउं ये माटी के, हो गए बारे-न्यारे॥४॥
भूख गरीबी सबरी मिट गई, कोउ दिखै नें दुखिया।
खण्ड-खण्ड बुन्देलखण्ड जौ, अखण्ड हो गऔ सुखिया॥
टलें फावडों से जड़ माया, चेतन धन का कईये।
बुन्देली में समौसरण कौ, देख नजारौ रइये॥५॥
बुन्देली के भाग्य विधाता, तुमें कैत जग सारौ।
भाग्य हमौरों कौ चमकइऔ, अब नें पल्ला झारौ॥
हम बुन्देली तुम बुन्देली, रिश्तौ गजब हमारौ।
सो बुन्देली चेला चेली, अर 'सुव्रत' खों तारौ॥६॥

ॐ ह्रूं षट्त्रिंशगुण-सुशोभित आचार्य श्री विद्यासागर गुरुवे जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

बुन्देली सें का बँधें, विद्यागुरु के गान।
फिर भी नमोस्तु हम करें, करबै खों कल्यान॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

(तर्ज : कैसे धरे मन धीरा रे-तीनों...)

गुरुवर की हो रई जय-जय रे, आरतिया उतारौ।
हाँ-हाँ रे! आरतिया उतारौ॥
मल्लप्पा श्रीमति के मौड़ा[2], ज्ञान गुरु से नाता जोड़ा[2]
शिष्य बनें गुरु स्वामी रे, गुरु-चरणा पखारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
थाल सजाऔ दीप जलाऔ, मंगल-मंगल महिमा गाऔ॥
नाचौ, गाऔ, झूमौ रे, गुरु-मूरत निहारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
चलते फिरते तीरथ गुरुजी, सब खौं भव से तारत गुरुजी॥
गुरु की शरणा पाऔ रे, गुरुवर खौं पुकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
नगन दिगम्बर चारितधारी, ज्ञानी ध्यानी पाप निवारी॥
जगत्-पूज्य परमेष्ठी रे; मोरी किस्मत सँवारो,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥
गुरु दयालु करुणाधारी, अब तौ सुन लो विनय हमारी॥
मुस्का कैं 'सुव्रत' खौं तारो रे, भव दुख सै निकारौ,
हाँ-हाँ रे, आरतिया उतारौ॥

===

मुनि श्री सुव्रतसागर जी पूजन

स्थापना (ज्ञानोदय)

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट्...। (पुष्पांजलिं)

बचपन से हम ज्ञान बिना ही, भटक रहे बनके बच्चे।
जनम-जनम के पाप मिटाने, आये हैं बनने सच्चे॥
जन्म जरा दुख मरण नशायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये जल अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं...।

भव की ज्वाला धधक रही है, झुलस रहे हैं खड़े-खड़े।
शीतल वाणी चंदन सम है, छाया पाने चरण पड़े॥
भव का ये संताप मिटायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु चंदन अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं...।

क्षत-विक्षत यह जीवन अपना, कैसे इसे सँवारे हम।
व्रत संयम से रक्षित होने, तुमको रोज पुकारें हम॥
तुम जैसे सु-व्रत हम पायें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु अक्षत अर्पित है, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्...।

सोना चाँदी रुपया पैसा, जिन्हें चाहिए दो उनको।

सुंदर काया जिन्हें सुहाये, कामदेव कर दो उनको॥
तुमसे तुमको माँग रहे हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु हम पुष्प चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

व्यंजन बहुत तरह के भोगे, फिर भी तो होती इच्छा।
भूख मिटे ना प्यास मिटे ना, अब कैसे होगी दीक्षा॥
निज रस चखने दीक्षा धर लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु नैवेद्य चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

चेतन करें आप सम उज्ज्वल, जिससे चंदा शर्माये।
ज्ञान तेज इतना चमकायें, सूरज फीका पड़ जाये॥
अंतर्मन तुम सम उज्ज्वल हो, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये दीप जलायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं...।

संकट उपसर्गों में भी तुम, कर्म काटने चलते हो।
खिन्न न होते प्रसन्न रहते, समता धरकर खिलते हो॥
हम भी दुष्कर्मों को सह लें, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये धूप जलायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

अगर डोर तुम बन जाओ तो, हम पतंग बन उड़ लेंगे।
अगर आप पतवार बनो तो, भवसागर हम तिर लेंगे॥
सदा आपके साथ रहें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु ये फल अर्पित हैं, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं...।

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ायें, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

मुनिवर की पूजन करें, मन में अति हर्षाएँ।
नमोऽस्तु कर जयमालिका, आओ हम सब गाएँ॥

(शंभू)

हे मुनिवर तेरे चरणों में, हम श्रद्धा सुमन चढ़ाते हैं।
जो जिनशासन के बेटे हैं, हम उनको शीश झुकाते हैं॥
जो विद्या गुरु के शिष्य रहे, पर अपने भाग्य सितारे हैं।
ऐसे सुव्रतसागर मुनिवर, सचमुच ही हमको प्यारे हैं॥1॥
है ग्राम पीपरा जन्म लिया, उपकृत फिर सागर जिला किया।
पितु साबूलाल माँ चंद्ररानी को, खुशियाँ देकर धन्य किया॥
भाई सुनील के लघु भ्राता, तीनों बहनों के हो प्यारे।
लौकिक शिक्षा भी उच्च कोटि की, कॉलिज में भी थे न्यारे॥2॥
जब सागर के भाग्योदय में, विद्या गुरुवर के दर्श किए।
तब अन्ठानवें में गुरुवर से, व्रत ब्रह्मचर्य 'राजेश' लिए॥
फिर कृपा बड़ेबाबा की पा, संघस्थ हुए फिर गमन किया।
नेमावर में विद्यागुरु ने, दे दीक्षा 'सुव्रत' बना दिया॥3॥
सु-व्रत पा सुव्रतसागर जी, अपने व्रत सुव्रत बना रहे।
अपनी मुनि चर्या पालन कर, अंतस में डुबकी लगा रहे॥

प्रभु की भक्ति में डूबे तो, विधान अनेकों रचा दिये।
श्री पूज्य बड़ेबाबा विधान रच, अतिशय बाबा के बता दिये ॥4 ॥
जिनचक्र विधान में चौबीसों, जिनवर की महिमा दिखलाई।
श्री सिद्धचक्र अरिहंतचक्र में, शुद्धातम सी झलकाई ॥
भक्तामर एकीभाव और, कल्याणमंदिर विधान रचे।
रच समवसरण आदि अनेक, शायद कोई ना शेष बचे ॥5 ॥
रच बुंदेली पूजन विधान, बुंदेली संत प्रसिद्ध बने।
भक्तों को भक्ति-अर्चना को, श्रीजिनवाणी के छंद बने ॥
ऐसे अनेक पूजा विधान रच, पद्यानुवाद कई बना रहे।
जिनका आश्रय पा भव्य जीव, खुद को धर्मात्मा बना रहे ॥6 ॥
सुन स्वाध्याय प्रवचन इनके, संस्कारी रूप सज जाते हैं।
ऐसे बुंदेली संत हमें, जीवन का लक्ष्य बताते हैं ॥
हे! मुनिवर 'सुव्रतसागरजी', हमको भी सु-व्रत दान करें।
'संजय' का नमोऽस्तु स्वीकारें, सो सुव्रत धर कल्याण करें ॥7 ॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

तुम जैसे हम भी धरें, विद्या के भण्डार।
विश्व शांति के भाव से, करें शांति जल धार ॥

(शांतये शांतिधारा)

माँ जैसे बच्चे तुम्हें, करें सदा ही याद।
सो नमोऽस्तु सादर करें, देना आशीर्वाद ॥

(पुष्पांजलिं...)

===

आरती मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

सुव्रतसागर जी महाराज, आज थारी आरती उतारें।
आरती उतारें थारी मूरत निहारें॥ सुव्रतसागरजी...

1. माँ चन्द्रानी के राजेश दुलारे,
पिता साबूलाल की आँखों के तारे।
जन्मे हैं पीपरा ग्राम, आज थारी...॥

2. विद्या गुरुवर से पाकर दीक्षा,
बनकर मुनि जब पाई है शिक्षा।
करने चले हो कल्याण, आज थारी...॥

3. जगमग दीपक हाथों में लायें,
मंगल-मंगल महिमा को गायें।
करके नमोऽस्तु बार-बार, आज थारी...॥

4. सुव्रत को पालें, सुव्रत के दाता,
भक्ति में रचते हैं लाखों गाथा।
सब पर लुटाते अपना प्यार, आज थारी...॥

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिंब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिन-समूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।
तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शांति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शांतये शांतिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शांति की धार।
कर्मों के ग्रह शांति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शांतये शांतिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रंथ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शांति आत्म शांति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान॥
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः पूजन विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु। (कायोत्सर्गं...)

===

महार्घ्य

मैं देव श्री अरहंत पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अरहंत भाषित वैन पूजूँ, द्वादशा रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरन, शिवहेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय,जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम, अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु-नन्दीश्वर जिनालय,खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलास श्री सम्मेदगिरि, गिरनार मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जय,होय पति शिवगेह के॥

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु विध भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववंदना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवंदना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंच-परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्र-

षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर-पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-हाटकापुरा-खंदारजी-चौबीसी-चंदेरी आदि-अतिशय-क्षेत्रेभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो-जलादि-महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुणव्रत संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमलदल लाजैं ॥
पञ्चम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थप्रर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक,नमो शान्तिहित शान्ति विधायक ॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी ॥
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघ को ॥
पूजें जिन्हें मुकुटहार किरीट लाके, इन्द्रादि देव अरुपूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत्प्रदीप, मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप ॥
संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले,कीजे सुखी हे जिन ! शान्ति को दे ॥
होवै सारी प्रजा को, सुख बलयुत हो, धर्म - धारी नरेशा।
होवै वर्षा समै पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा ॥
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै, हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारैं, जिनवर वृष को, जो सदा सौख्यकारी ॥
घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज ॥

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का ॥
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौलों सेऊँ, चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलों लीन रहों प्रभु, जबलों पाया न मुक्ति पद मैंने॥
अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर ! पाऊँ, तव चरण-शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ कर्मों क क्षय सुबोध सुखकारी ॥

(पुष्पाञ्जलिं...) (कायोत्सर्ग - नौ बार णमोकार मन्त्र)

विसर्जन

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय ॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान ॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजें भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण ॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका,लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप)

===

आलोचना पाठ

(दोहा)

चौबीसों प्रभु को नमूँ, परमेष्ठी जिनराज।
कर लूँ निज आलोचना, आत्म शुद्धि के काज ॥1 ॥

(सखी)

हे परम दयालू भगवन्, मैं करके नमोऽस्तु दर्शन।
चरणों में अरज लगाऊँ, कैसे निज दोष नशाऊँ ॥2 ॥
मैं होकर क्रोधी मानी, कपटी लोभी अज्ञानी।
दिन भर चर्या करने में, आना-जाना करने में ॥3 ॥
पढ़ने-लिखने लड़ने में, निंदा ईर्ष्या करने में।
सुख-दुख रोने-हँसने में, या छींक जँभाई खांसी में ॥4 ॥
सोने-जगने सपने में, मल-मूत्र थूक तजने में।
चूल्हा चक्की चौका में, बर्तन झाड़ू पौंछा में ॥5 ॥
भोजन जल-बिलछानी में, धोने व न्हवन पानी में।
शैम्पू सोड़ा साबुन में, फैशन अंजन-मंजन में ॥6 ॥
या टी. व्ही. मोबाइल में, या नेट मनोरंजन में।
कृषि नौकरी धंधे में, जो हुये व्यसन अंधे में ॥7 ॥
या दवा कीटनाशक में, बिजली मकान पावक में।
हिंसा असत्य चोरी में, अब्रह्म परिग्रह ही में ॥8 ॥
फल पंच उदम्बर खाके, या मद्य-माँस-मधु पाके।
जो नहीं मूलगुण धारे, बाईस अभक्ष्य अहारे ॥9 ॥
या नित्य देव दर्शन में, या कभी रात्रि भोजन में।
जल पिया कभी अनछाना, त्रय [1]कुलाचार न जाना ॥10 ॥
जो लेकर नियम न पाले, प्रतिकूल धरम के चाले।

1. नित्य देवदर्शन, रात्रिभोजन का त्याग, बिना छने पानी का त्याग।

या देव-शास्त्र-गुरुओं में, या अपने या औरों में ॥11॥
मैंने कर पापाचारी, जो करुणा ना हो धारी।
उससे जो जीव मरे हों, या पीड़ित घात करे हों ॥12॥
या पर से पाप कराये, या अनुमोदन मन भाये।
वह मन-वच-तन के द्वारे, टल जायें कषाय सारे ॥13॥
पच्चीस दोष दर्शन के, या ज्ञान चरित आगम के।
दिन रात कभी भी कैसे, जाने अनजाने जैसे ॥14॥
जो पाप हुये हों मुझसे, प्रभु आप बचालो उनसे।
धिक्! धिक्! धिक्कारो मुझको, प्रभु क्षमादान दो मुझको ॥15॥
सीता द्रोपदि या मैंना, या अंजन चंदन मैं ना।
पर नाथ! भक्त तेरा हूँ, सो शुद्धि आप सम चाहूँ ॥16॥
बस बोधि समाधि हो मेरी, हो छत्रच्छाया तेरी।
कर 'सुव्रत' अब ना देरी, प्रभु! शरण न छूटे तेरी ॥17॥

(दोहा)

वीतराग निर्दोष हैं, परमेष्ठी जिनराज।
बन जाऊँ निर्दोष मैं, सो नमोऽस्तु हो आज॥

===

सुप्रभात स्तोत्र (भावानुवाद)

(दोहा)

गर्भ जन्म तप ज्ञान वा, भजें मोक्ष कल्याण।
सो मेरा सुप्रभात हो, मंगलमय निर्वाण ॥1॥

(चौपाई)

जिनके चरण देव जन छूते, दुर्द्धर कर्म जिन्हों के छूटे।
वृषभ अजित यों शंभव स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥2॥

छत्र चमर से शोभित नामी, सुमतिनाथ अभिनन्दन स्वामी।
पद्म प्रभु द्युति अरुण समानी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥3॥
नाथ सुपारस हरियल ज्योति, चन्द्रप्रभु ज्यों चाँदी मोती।
पुष्पदंत द्युति फटिक समानी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥4॥
तप्त स्वर्णसम शीतल नाथा, प्रभु श्रेयांस हरे विधि गाथा।
वासुपूज्य तनु पुष्प ललामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥5॥
विमलनाथ प्रभु दर्प निवारी, प्रभु अनंत सुख धीरज धारी।
कर्म रहित प्रभु धर्म सुधामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥6॥
स्वर्णिम शांतिनाथजी प्यारे, कुंथुनाथ करुणा शृंगारे।
अरहनाथ जिन तीरथ स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥7॥
मल्लिनाथ मद मोह निवारी, जय सुव्रत प्रभु शिव सुख धारी।
जय नमिनाथ शांति के स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥8॥
नेमिनाथ साँवलिया नेता, पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता।
वर्द्धमान जिनशासन स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥9॥
श्वेत लाल हरियल प्रभु पीले, शाश्वत सुख के धाम सुनीले।
रहे एक सौ सत्तर स्वामी, सुबह-सुबह नित तुम्हें नमामि ॥10॥

(दोहा)

सुबह-सुबह नवदेव को, कर नमोस्तु धर ध्यान।
सहयोगी नक्षत्र हों, नश जाता अज्ञान॥
सो 'सुव्रत' सुप्रभात को, भजते प्रभु चौबीस।
कर्म हरें मंगल करें, अतः झुकायें शीश॥

===

दर्शन पाठ

(दोहा)

दर्शन प्रभु अर्हंत का, दर्शन पाप नशाय।
दर्शन सीढ़ी स्वर्ग की, दर्शन मोक्ष दिलाय ॥1 ॥
जिन-दर्शन मुनि वंदना, हरे पाप दुख पीर।
छिद्र सहित ज्यों अंजली, खोती अपना नीर ॥2 ॥
पद्मरागमणि कांति सम, वीतराग मुख देख।
दर्शन से बहु जन्म के, नशते पाप अनेक ॥3 ॥
दर्शन श्री जिन-सूर्य का, भव-तम करता नाश।
हृदय कमल विकसित करे, सारे अर्थ प्रकाश ॥4 ॥
दर्शन श्री जिन-चंद्र का, धर्मामृत बरसाय।
हरे दाह भव जन्म का, सुख का सिन्धु बढ़ाय ॥5 ॥
प्रतिपादक सब तत्त्व के, गुणसागर मय आठ।
नगन शान्त जिन रूप को, सदा झुकाऊँ माथ ॥6 ॥
चिदानन्द परमातमा, एक जिनेन्द्री रूप।
दिग्दर्शक परमात्म के, नमूँ सिद्ध शिव रूप ॥7 ॥
अन्य शरण मेरी नहीं, मात्र शरण जिन नाथ।
करुणा कर रक्षा करो, मेरी रक्षा आप ॥8 ॥
त्रय जग में तुम सा नहीं, रक्षक त्राता ठौर।
वीतराग सा देव भी, हुआ न होगा और ॥9 ॥
भव-भव में प्रतिदिन रहे, श्री जिन-भक्ति सदैव।
नित मुझमें जिन-भक्ति हो, हो जिन-भक्ति सदैव ॥10 ॥
मुझे बिना जिन-धर्म के, चक्री की ना आश।
भले दुखी दारिद रहूँ, पर जिन-धर्म निवास ॥11 ॥

जनम-जरा-मृतु रोग वा, जनम-जनम के पाप।
प्राप्त करोड़ों अघ नशें, जिन-दर्शन से आप ॥12 ॥

(ज्ञानोदय)

नाथ! आप के पद कमलों के, पावन दर्शन आज किये।
जिससे मेरे प्यासे नयना, सफल हुये गुण-सुधा पिये॥
तीन लोक के तिलक जिनेश्वर, आज मुझे लगता ऐसा।
मेरा खारा भवसागर अब, शेष बचा चुल्लू भर सा॥13॥

===

दर्शन पाठ

(चौपाई)

दर्शन श्री देवाधिदेव का, दर्शन नाशक पाप मोह का।
दर्शन स्वर्ग सीढ़ियाँ पावन, दर्शन रहा मोक्ष का साधन ॥1 ॥
प्रभु जिनेन्द्र का दर्शन करके, साधू संत का वंदन करके।
नशे पुरानी पाप कहानी, झड़े अंजुली में ज्यों पानी ॥2 ॥
पद्मराग मणि जैसा सुंदर, वीतराग मुख आज देखकर।
जन्म-जन्म में पाप कमाते, दर्शन से वो सब नश जाते ॥3 ॥
जगत अंध को हरने वाला, हृदय कमल विकसाने वाला।
हर पदार्थ जो करे प्रकाशन, ऐसा जिन सूरज का दर्शन ॥4 ॥
धर्मामृत वरसाने वाला, जन्मदाह दुख हरने वाला।
सुख सागर का करता वर्धन, ऐसा जिन सूरज का दर्शन ॥5 ॥
जीव आदि सब तत्त्व दिखाये, सम्यक्त्वादि गुण प्रकटाये।
प्रशांत रूप दिगम्बर प्यारा, देवाधिदेव को नमन हमारा ॥6 ॥
चिदानंद जिन एक रूप हैं, जो परमात्म प्रकाश नित्य हैं।
सिद्धात्म परमातम न्यारे, जिनको नमोऽस्तु रोज हमारे ॥7 ॥

अन्य शरण कोई ना मेरी, केवल आप शरण हो मेरी।
अतः बहाके करुणा झरना, मेरी रक्षा-रक्षा करना ॥8॥
तीन काल में तीन लोक में वीतराग सा नहीं विश्व में।
तारक-तारक-तारक ना है, हुआ ना होगा अब भी ना है ॥9॥
रहे सदा जिन भक्ति मुझमें, रहे सदा जिन भक्ति मुझमें।
भव-भव में हो हो दिन-दिन में, रहे सदा जिन भक्ति मुझमें ॥10॥
यदि जिनधर्म त्याग है करना, तो मुझको चक्री ना बनना।
भले दुखी दारिद्र रहूँ मैं, पर जिनधर्म न छोड़ सकूँ मैं ॥11॥
जन्म-जन्म में पाप किये जो, जन्म करोड़ों में अर्जित जो।
जन्म-मृत्यु वा रोग बुढ़ापा, जिनदर्शन से नश ही जाता ॥12॥
सफल हुए द्वय नयना मेरे, चरण कमल कर दर्शन तेरे।
नाथ! मुझे लगता अब ऐसा, भव जल शेष बचा चुल्लू सा ॥13॥

===

भक्तामर भाषा

(चौपाई)

भक्तामर की मणि चमकायें, पाप अंध विस्तार नशायें।
भव जल पतितों के अवलंबन, उन जिन पद को सम्यक् वंदन ॥1॥
बुद्धि कला जिन श्रुत से पाके, जगत मनोहर गीत रचा के।
सुरपति कहें छंद आदि को, मैं ध्याऊँगा उन आदि को ॥2॥
जिन चरणा सुर पूजित मानेंख मैं उद्यत उनके गुण गा के।
ज्यों लज्जा बिन शिशु की हठता, कौन चंद्र जल बिम्ब पकड़ता ॥3॥
गुण समूह है चंदा जैसे, सुरपति उन्हें कहेगा कैसे।
ज्यों सागर तुफान उठेगा, कौन बाहु से तैरेगा ॥4॥
भक्ति भाव वश दशा हमारी, भक्ति शक्ति बिन करूँ तुम्हारी।

जैसे हिरणी बिना विचारे, शिशु रक्षा को शेर पछाड़े ॥5 ॥
ज्ञानी हँसी उड़ाये मेरी, फिर भी भक्ति करूँ मैं तेरी।
ज्यों बसंत में मौर देखकर, कोयल बोले मौन खोलकर ॥6 ॥
रात अँधेरा जग को ढाँके, देश सूर्य किरणों को काँपे।
वैसे भव-भव पाप हुए जो, तव संस्तव से नाश हुए वो ॥7 ॥
अल्प बुद्धि से मैं शुरू कर लूँ, छंदोबद्ध प्रभु भक्ति कर लूँ।
प्रभु प्रभाव से जग हर लेगा, सचमुच मोती सा चमकेगा ॥8 ॥
सूर्य दूर पर किरणें पाते, कमल सरोवर के खिल जाते।
प्रभु संस्तव उसका क्या कहना, केवल कथा हरे भव भ्रमणा ॥9 ॥
भूतनाथ! भूषण! ना विस्मय, पूजक पूज्य बना तुम सम जय।
आखिर उससे कौन प्रयोजन, आश्रित को जो ना दे निज धन ॥10 ॥
क्षीर सिंधु को पी जल मीठा, कौन क्षार का पियेगा तीखा।
अपलक दर्शन योग्य तुम्हीं हो, तुमको देख नजर ना कहीं हो ॥11 ॥
सुंदर शांत राग रुचि द्वारा, जिन अणुओं ने तन शृंगारा।
भू पर वे अणु उतने पूजे, अतः आप सम कोई न दूजे ॥12 ॥
कहाँ प्रभु मुख जगत लुभाये, जीते सब जग की उपमाएँ।
और कहाँ वह दागी चंदा, दिन में पड़ता फीका मंदा ॥13 ॥
पूर्ण चन्द्र सम गुण गण तेरे, त्रय जग लाघें सब में डेरे।
जो पाएँ प्रभु चरण शरण को, रोके कौन उन्हें विचरण को ॥14 ॥
प्रलय काल से पर्वत काँपे, पर क्या सुमेरु हिले जरा से।
यौं सुरियों के नाच देख के, अचरज क्या प्रभु कभी ना डिगते ॥15 ॥
धुआँ बाति बिन तेल उजाले, त्रय जग रोशन करने वाले।
जिसे आँधियां बुझा न पाएँ, आप अलौकिक दीप कहाएँ ॥16 ॥

अस्त न होता राहु न डसरा, जिन प्रभाव को मेघ न ढकता।
युगपद त्रय जग प्रभु दिखलाएँ, महिमा अधिक सूर्य से पाएँ ॥17॥
राहु इसे ना व्यि प्रकाशी, मेघ ढके ना मोह विनाशी।
प्रभु का मुख उज्ज्वल चंदा सा, जात प्रकाशी आनंदा सा ॥18॥
काम हुआ जब फसलों का है, तो क्या काम बादलों का है।
अंत चंद्र मुख प्रभु यों नाशे, तो क्या सूरज क्या चंदा से ॥19॥
चमक रही मणियों में जैसे, काँच किरण में क्या हो वैसे।
ऐसे ज्ञान आप में शोभे, पर देवों में क्या वह होवे ॥20॥
पर दर्शन में श्रेष्ठ बताऊँ, पर संतोष आप में पाऊँ।
दर्शन से क्या-क्या मैं पाऊँ, पर भव में पर में ना लुभाऊँ ॥22॥
परम पुरुष मानें मुनि नेता, पर तुम रवि सम तिमिर विजेता।
मृत्युंजय हो तुमको पाकर, मोक्ष-मोक्ष पथ तुमसे ना पर ॥23॥
अव्यय अचिंत्य असंख्य विभू हो, ब्रह्मा अनंत अनंग केतु हो।
एकानेक विदित योगीश्वर, तुम्हें कहें मुनि शुचि ज्ञानीश्वर ॥24॥
देव पूज्य हो बुद्ध स्वरूपी, जग सुखदाता शंकर रूपी।
शिवमग दाता तुम्ही विधाता, तुम पुरुषोत्तम हो विख्याता ॥25॥
जग दुख हरता तुम्हें नमोऽस्तु, जाति भूषण तुम्हें नमोऽस्तु।
जग परमेश्वर तुम्हें नमोऽस्तु, भव जल शोषक तुम्हें नमोऽस्तु ॥26॥
जब गुणगण ने साथ न पाया, क्या विस्मय तुमको अपनाया।
किन्तु दोष जो पर में टिकते, प्रभु में सपने में न दिखते ॥27॥
ऊँची किरणें अंध विनाशी, बादल दल के निकट निवासी।
सुंदर प्रभु तन सूरज जैसा, अशोक तरुतल शोभित ऐसा ॥28॥
सिंहासन मणि किरणों जैसा, उस पर प्रभुतन सोने जैसा।

यों लगता ज्यों उदयाचल से, सूर्य उगा हो पूर्ण प्रभा ले ॥29॥
कुंद पुण्य सम धवल चँवर है, मध्य सुनहरे प्रभु सुंदर।
यों लगता ज्यों सुरगिरि तट पर, चंदा सम झरने हो झर-झर ॥30॥
सूर्य ताप हर ऊँचे होवें, मणियों की लड़ियों मय शोभें।
तीन छत्र चंदा सम भाएँ, त्रय जग के तुम नाथ बताएँ ॥31॥
उच्च स्वरोंमय, दिश गूँजे, शुभ संगम को त्रय जग पूजें।
दुंदुभि बाजा यथा आपका, धर्मराज की विजय पताका ॥32॥
पारिजात सन्तानक आदि, दिव्य पुष्प जल-कण इत्याादि।
मंद दिव्य पुष्पों की वर्षा, लगे दिव्य वचनामृत वर्षा ॥33॥
उदित हो रहे सूर्य बहुत से, उज्ज्वल शीतल चंदा जैसे।
त्रय जग की सुंदरता जेता, प्रभु भामण्डल रात्रि विजेता ॥34॥
स्वर्ग मोक्षपथ की दिग्दर्शन, धर्म तत्त्व कहने में सक्षम।
विशद अर्थ हर भाषा रूपी, दिव्यध्वनि ओंकार स्वरूपी ॥35॥
नए सुनहरे कमलों जैसे, नख की किरणें चमकें ऐसे।
चरण कमल प्रभु जहाँ जमायें, वहीं देवगण कमल रचायें ॥36॥
इस विधि वैभव दिव्य ध्वनि का, हुआ आपका नहीं किसी का।
तम हर सूरज कांति जैसी, तारों गण की ज्योति न वैसी ॥37॥
मद् मैले गालों से झरता, क्रोध भ्रमर गूँजों से बढ़ता।
यों ऐरावत गज हो आगे, तो प्रभु शरणागत ना भागे ॥38॥
जो फाड़े गज गंडस्थल को, गजमुक्ता से भूषित थल को।
ऐसा सिंह भी निज पंजों से, बोल सके ना जिन भक्तों से ॥39॥
अंगारों सी आग धधकती, प्रलयकाल से खूब भभकती।
ऐसी आग अगर लग जाये, प्रभु कीर्तन जल शीघ्र बुझाये ॥40॥

कोयल के कंठों सा काला, क्रुद्ध नयन उठाते फण वाला।
ऐस नाग अभय हो लाँघे, प्रभु की मणि हृदय जो राखे ॥41॥
जहाँ अश्व गज की चिंघाड़ें, जहाँ शत्रु रण में ललकारें।
प्रभु कीर्तन से यूँ रिपु भागें, अंध सूर्य किरणों ज्यों नाशें ॥42॥
फाड़ गये गज युद्धा भाले, रक्त मेघ में दौड़ने वाले।
ऐसे रण में शत्रु हरायें, जो प्रभु पद पंकज वन ध्यायें ॥43॥
मगरमच्छ मय वड़वानल हो, फिर पाठीन तरंगित जल हो।
यदि जलयान वहीं फँस जायें, तो प्रभु सुमरण कर तट पायें ॥44॥
रोग जलोदर कमर झुकाये, जो जीने की आश गँवाये।
प्रभु चरणामृत पा ऐसे नर, कामदेव सम होवें सुंदर ॥45॥
बड़ी साँकलों से बाँधा हो, ऐड़ी चोटी तक जकड़ा हो।
पैर छिलें उनकी रगड़न से, शीघ्र टलें प्रभु नाम मंत्र से ॥46॥
ये संस्तव मतिमान बढ़े जो, शेर युद्ध गज भय न उसे हो।
सिन्धु महोदर बंधन के भय, सर्प दवानल वो कर ले जय ॥47॥
मैंने बुनी भक्ति भावों से, ये जो माला गुण पुण्यों से।
इसको जो नित कंठ धरेगा, मानतुंग सम लक्ष्मी वरेगा ॥48॥

(दोहा)

संस्कृत भक्तामर रचें, 'मानतुंग' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाईयाँ, आदिनाथ प्रभु ध्याएँ॥

===

महावीराष्टक स्तोत्र (भावानुवाद)

(चौपाई)

लोकालोक झलकते ऐसे, जिनचेतन में दर्पण जैसे।
सूरज सम जो पथ दें ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥1॥
अपलक लाल न जिनके नयना, क्रोध रहित भक्तों के गहना।
मूरत परम शांत निज-ध्यानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥2॥
जिनको पूजें सुर मणिमाला, जिनकी याद हरे भव-ज्वाला।
जिनका सुमरण शीतल पानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥3॥
मेढ़क देव बना पूजन कर, तो जिन भक्त मोक्ष पायें फिर।
इसमें क्या आश्चर्य कहानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥4॥
तन है फिर भी ज्ञान सहित हैं, जन्म रहित सिद्धारथ सुत हैं।
एक अनेक धनी विज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥5॥
नय तरंग गंगा जिनवाणी, हमें ज्ञान जल दें कल्याणी।
दिखें आज भी हंसा ज्ञानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥6॥
महा मोक्ष पाने बचपन से, दुर्जय काम हररें निज बल से।
बने जितेन्द्री अंतर्यामी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥7॥
मोह रोग हर वैद्य तुम्हीं हो, मंगल कर जगबंधु तुम्हीं हो।
साधु संत के शरणा दानी, मम नयनों में वीरा स्वामी ॥8॥

(दोहा)

संस्कृत में अष्टक रचे, 'भागचंद' गुण गाएँ।
'सुव्रत' रच चौपाइयाँ, महावीर बन जाएँ॥

===

गोम्टेश अष्टक (भावानुवाद)

(चौपाई)

नीलकमल दल जैसे नयना, चंदा जैसा मुखड़ा है ना।
नासा लख चंपा हुई पानी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥1 ॥
नभ जल जैसे गाल चमकते, कंधों तक तो कान लटकते।
भुजा दंड गज सूँड समानी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥2 ॥
कंठ शंख जैसा अनुपम है, वक्ष विशाल हिमालय सम है।
कटि प्रदेश अचल अभिरामी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥3 ॥
विंध्यगिरी पर चमक रहे जो, सब चैत्यों के प्रमुख रहे जो।
जग को सुख दें चंदा स्वामी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥4 ॥
जिनके तन पर चढ़ी लतायें, जिन्हें कल्पतरु भव्य बतायें।
जिन पद में सुर भी प्रणमामि, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥5 ॥
जिन्हें न भय जो शुद्ध दिगम्बर, जिनके मन को रुचे न अम्बर।
सर्प आदि से कपित न स्वामी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥6 ॥
आश रहित समदर्शनधारी, सुख नहिं चाहें दोष निवारी।
भरत भ्रात में शल्य विरामी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥7 ॥
तजे उपाधी समता पाये, वित्त धाम मद मोह नशाये।
किये वर्ष भर अनशन स्वामी, उन गोम्मटेश को सदा नमामि ॥8 ॥

(दोहा)

प्राकृत में अष्टक रचे, 'नेमिचन्द्र' गुण गाए।
बाहुबली के पद्य में, 'सुव्रत' गीत सुनाए॥

===

आरती–पंचपरमेष्ठी

जिनवर की बोलो जय–जय रे, आरतिया उतारो।
हाँ–हाँ रे...आरयिा उतारो॥

1. पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जहाजा।
2. दूसरी आरती सिद्धन केरी, सुमरन करत मिटै भव फेरी।
3. तीसरी आरती सूरि मुनिन्दा, जनम–मरण दुख दूर करिन्दा।
4. चौथी आरती श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
5. पाँचवी आरती साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।

भजन

हे! स्वामी तेरी पूजा करूँ मैं–2,
हर पल तेरी अर्चा करूँ मैं॥

सावन का महीना होगा, उसमें होगी राखी।
विष्णु मुनि जैसी सेवा करूँ मैं, हर पल...॥1॥
भादों का महीना होगा, उसमें होगी वारिश।
दसलक्षण की चर्चा करूँ मैं, हर पल...॥2॥
कार्तिक का महीना होगा, उसमें होगी दीवाली।
वीर प्रभु जैसी मुक्ति वरूँ मैं, हर पल...॥3॥
फागुन का महीना होगा, उसमें होगी होली।
अष्टाह्निक के रंग रंगूँ मैं, हर पल...॥4॥
वैशाख का महीना होगा, उसमें होगी अख–ती।
राजा श्रेयांस–सोम सा दान करूँ मैं, हर पल...॥5॥
आषाढ़ का महीना होगा, उसमें होगा चौमासा।
विद्या गुरु की भक्ति करूँ मैं, हर पल...॥6॥

THE NINE FINE GOD WORSHIP

Foundation (Couplet)

Jain fan find to, nine fine God
Now quick start we, worshipping method.

O! Nine fine god we want to do your worship so we respectfully invite you to please come here... come here...! please sit here... sit here...! please stay in our heart. **(Flower offering)**

(Quatrain)

Water washes outer body,
inter we have soul some dirty.
But we want the soul divine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our birth-death cycle so we worship you by pure water .

Burning fire everywhere,
nothing peacefull life her .
But we want peacefull time,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our whole anger cycle so we worship you by pure sandal.

Competition is very lengthy,
how to face it faith not healthy.
Please stop this emotional crime,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our this world cycle so we worship you by pure unbroken rices.

Everybody servant of body,
nobody become boss of body.
But we don't want this world wine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our celibacy character for life so we worship you by pure flowers.

Universal truth is diet,
how to defeat this hunger fight.
But we don't want food poison,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our hunger disease so we worship you by pure food items.

Dark heart but lighted body,
this is way of sorrow melody.
Please give us your spirit shine,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our ignorance cycle so we worship you by pure lamp.

Karma king is boss of gambler,
who comes in this world sin counsler.
But we want your victory sign,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want to stop our karma cycle so we worship you by pure incense (dhoop).

Bad work give outcome wrong,
best work give outcome long.
Please give us your platinum coin,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our bliss so we worship you by pure fruits .

Good-good things of pure collection,
we want admission your section
Please give me your entry line,
so respect o! godhead nine.

O! Nine fine god we want our priceless status so we worship you by mix things .

BAY OF THE NINE FINE GOD

(couplet)

God has full purity, infinite virtues
Faithfully except it , faithless confuse

(lion move)

1. The first god lord Shri ARIHANTA half pure,
Donate all fans path pure and sure.
2. Second god lord Shri SIDDHA got soul,
They distribute gold goal left world role.
3. AACHARYA god lord great saints of jains,
They give the vows who closed our sins rains.
4. Dispatch UPADHYAY god light religions,
We take that long life light decision.
5. The fifth god lord JAIN'S MONKS saints head,
To get pure soul the pickup skyclad.
6. Jainism is the bliss way called JIN DHARMA,
Jainism principles written volume JIN AAGAMA.
7. Statues of the jain god called JIN CHAITYA,
The temple of the jain gods called JINALAYA.
8. We pray to nine god gain your devotees,
Give the excellence path right gravities.
9. So we want come to your happy- happy home,
Give the happy - happiness 'SUVRAT' wants 'om'.

(couplet)

Nine fine god give, right - right knowledge.
Every - every worshipper, dedicated age.

O! Nine fine god we praise bay of worship you to be dedicated complite mix things . (Flower offring)